अइम्मा-ए-अहल बयत का एक मुख़्तसर तआरुफ़

अल्लामा शम्सउद्दीन ज़हबी

मुरत्तब
खुसरो क़ासिम

मुतरजिम (हिन्दी)
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

अइम्मा-ए-अहले बयत का एक मुख़्तसर तआरुफ़

शम्सउद्दीन अबू अब्दल्लाह मुहम्मद इब्न उस्मान इब्न फयमाज़ इब्न अब्दल्लाह अल तुर्कुमानी अल फरिकी अल दिमश्की अल शाफई (मुतवफ्फा : **1348** इसवी)

अल्लामा शम्सउद्दीन ज़हबी

मुरत्तब

खुसरो क़ासिम

मुतरजिम

डॉ. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी

नाम	:	**अईम्मा-ए-अहले बयत का एक मुख़्तसर तआरुफ**
मुरत्तब	:	ख़ुसरो क़ासिम असिस्टेंट प्रोफेसर मिकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अलीगढ़ उत्तरप्रदेश, भारत
हिन्दी मुतरजिम	:	डो. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी फाउन्डर एन्ड चेरमेन ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत
सन-ए-इशाअत	:	**2018**
हदिया	:	रु. **30/-**
कम्पोसिंग एण्ड प्रिंटिंग	:	ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह), मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

:: मिलने का पता ::

ईमाम जा'फर सादिक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नह)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

Mo. 8511021786

अर्ज़े मुतरजिम
(अनुवादक का निवेदन)

अल्लाह ﷻ! के नाम से शुरु किजो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ! के रसूल है। अल्लाह ﷻ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"अईम्मा-ए-अहले बयत का एक मुख़्तसर तआरुफ"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँखों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अली عليه السلام को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने ख़ुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के Mechanical Engineering Department के Assistant Professor **हज़रत ख़ुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अहले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत عليهم السلام और मुहब्बत-ए-अली عليه السلام ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अहले सुन्नत का 1400 साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। ये बात प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने "शान-ए-अहले बैत" में सिर्फ 20 (बीस) सालो में 160 से भी ज़्यादा किताबे लिख़कर बता दिया है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने इन किताबो में सिर्फ और सिर्फ अहले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अहले सुन्नत के 1400 साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक़्क़ीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। 1400 साल के इस समन्दर को एक जगह पर इकट्ठा करने का काम प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने किया हैं. प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अहले सुन्नत कहलाने वाले अह्ल-ए-हदीस और अह्ल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा عليه السلام से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँख़ों से देख़ी हैं. अल्लाह ﷻ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उनको, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ﷻ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत عليهم السلام की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहेज़ादहुसैन यासीनमीयां काज़ी

मुक़दमा

सूफ़िया ऐ किराम का अहले बयत से ताल्लुक़ और अक़ीदत:

इस दौर में नास्बियत और ख़ारजियत के ग़लबे ने जिस ने "सलफ़ियत" का लिबादा ओढ़ रखा है मुसलमानों को अहले बयत से बहुत दूर कर दिया है। उनसे अक़ीदत और मुहब्बत तो दूर की बात है, अक्सर लोगों को उनके नाम तक नहीं मालूम लेकिन एक नूरानी दौर ऐसा भी था की तमाम उलमा, मशाइख़ और उरफा अहले बयत के नशे में मख़्मूर थे। उनकी मोहब्बत और अक़ीदत का मेहवर ही मुहम्मद ﷺ और आल ऐ मुहम्मद ﷺ थे।

हिंदुस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में ख़ुद को अहले सुन्नत कहलानेवाले तीन मसालिक हैं देवबंदी, बरेलवी और अहले हदीस या सलफ़ी । अब हम एक ऐसे आलिम ए दीन के अक़वाल नक़ल करेंगे जिन्हें ये तीनों जमातें अपना पेशवा और इमाम मानती हैं वह हैं शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ؒ।

शाह साहब फरमाते हैं :

मैंने एक रोज़ अहल बयत ؑ के इन मज़ारात की तरफ तवज्जो की जो नूर के सरचश्मे हैं, तो मैंने देखा कि उनका सिलसिला असल और यह सलासल अवलियाअ उसकी फराअ हैं ।" **(अल-कवल अल जली सफ़ा: ५७)**

शाह वलीउल्लाह देहलवी ؒ तहरीर फरमाते हैं कि

فوارثه الذين اخذ والحكمة والعصمة والقطبية الباطنية هم اهل بيته و خاصته (تفہیمات الہیہ جلد دوم صفحہ ۱۴)

तर्जुमा : "तो रसूल अकरम ﷺ के वारिस जिन्होंने आपसे हिकमत, अस्मत और बातिनी क़ुतबियत अख़्ज़ की है वह आपके अहले बयत और मख़्सूस क़राबतदार हैं"।

आगे चलके फरमाते हैं कि:

واذاتمت العصمة كانت افاعيلها كلها حقا لا اقول انها تطابق الحق بل هى الحق بعينها بل الحق أمر ينعكس من تلك الافاعيل كالضوء من الحق واليه اشار رسول الله ﷺ حيث دعا الله تعالىٰ لعلى اللهم ادارالحق حيث دارولم يقله ادره حيث دارالحق. (حوالہ مذکورہ صفحہ ۲۲)

"जब अस्मत कामिल हो जाती है तो उसके सारे अफ़आल हक़ होते हैं। मैं यह नहीं कहता की वे हक़ के मुताबिक़ होते हैं बल्कि यह अफ़आल बऐनिही हक़ होते हैं बल्कि हक़ ऐसा अम्र है जो इन अफ़आल से इस तरह मुनअकिस होता है जैसे सूरज से रोशनी और इसी बात की तरफ रसूलल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया है जब कि अल्लाह ﷻ से अली عليه السلام के लिए दुआ की थी कि **बार इलाहा हक़ को उधर घुमा दे जिधर अली عليه السلام जाएँ और यह नहीं फ़रमाया कि जिधर हक़ जाए उधर अली عليه السلام को घुमा दे।**"

बाब 'विलायत' में शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी رحمه الله के अल्फ़ाज़ मुलाहिज़ा हों:

۱- وفاتح اول ازین امت مرحومہ حضرت علی مرتضٰی است کرم اللہ تعالیٰ وجہہ

(शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी رحمه الله, अततफ़ल्लहीमात अल इलाहिया,१:१०३)

"इस उम्मत मरहूम में (फ़ातिह अव्वल) विलायत का दरवाज़ा सबसे पहले खोलने वाले फरद हजरत अली अल मुर्तजा عليه السلام हैं।

۲- وسر حضرت امیر کرم اللہ وجہہ دراولاد کرام ایشان رضی اللہ عنہ سرایت کرد۔

(शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी رحمه الله, अततफ़ल्लहीमात अल इलाहिया: १:१०३)

"हजरत अमीर رضي الله عنه का राज़ विलायत आपकी औलाद किराम رضي الله عنهم में सरायत कर गया"।

۳- چنانکہ کسی ازاولیاء امت نیست الا بخاندان حضرت مرتضٰی رضی اللہ عنہ

(शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी رحمه الله, अततफ़ल्लहीमात अल इलाहिया, १: ४०१)

"चुनाँचे औलिया ए उम्मत में से एक भी ऐसा नहीं है जो किसी ना किसी तोर पर हज़रत अली عليه السلام के ख़ानदान इमामत से (इकतसाब विलायत के लिये) वाबस्ता ना हो।"

۴- وازامت آنحضرت ﷺ اول کسیکہ فاتح باب جذب شدہ است، ودراں جا قدم نہادہ است حضرت امیر المؤمنین علی کرم اللہ وجہہ، ولہذا سلاسل طرق بداں جانب راجع میشوند۔ (شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، ہمعات:۲۰)

"हुज़ूर ﷺ की उम्मत में पहला फर्द जो विलायत के (सबसे आ'अला व अक़वा तरीक़) बाब जज़्ब का फ़ातेह बना और जिसने इस मुक़ाम बुलंद पर (पहला) क़दम रखा वह अमीर उल मो'मिनीन हज़रत अली ؑ की ज़ाते गिरामी है, इसी वजह से रूहानियत व विलायत के मुख़्तलिफ़ तरीकों के सलासिल आप ही की तरफ रुजू करते हैं।" (शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी ؒ, हमाअत:२०)

अब कुछ और उनके तलामिज़ा और हमसर उलमा का कलाम नक़ल करते हैं। आपके मशहूर शागिर्द **मौलाना मुईन सिंधी** लिखते हैं।

فلاوجه لان يمترى من له ادنىٰ انصاف فى ان من صدق عليهم هذا الحديث والآية من غير شائبة هم الائمة الاثنىٰ عشرو سيدة نساء العالمين بضعة رسول الله أم الائمة الزهراء الطاهرة على ابيها وعليهم السلام لاشائبة فى كونهم معصومين كالمهدى منهم عليهم السلام.

(دراسات اللبيب صفحه ٢٠٨ طبع لاهور)

"जिसके दिल में ज़रा सा भी इंसाफ है इस बात में शक करने का कोई सबब नहीं है कि जिन लोगों पर यह हदीस (सक़लैन) और आयत (तत्हीर) सादिक़ आती है वह किसी शक व शुबह के बग़ैर यही बारह इमाम और ज़नान आलम की सरदार बिज़अते रसूल ज़हरा ताहिरा ؑ हैं। उनके वालिद और उन सब पर सलाम हो। इन हज़रात के मासूम होने में कोई शक व रैब नहीं है मिस्ल इमाम मेहदी ؑ के कि वह उन्ही में से हैं।"

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपति ؒ का क़ौल है कि, "मैं कहता हूँ कि सहीह रिवायत में आया है कि रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत फातिमा ؑ का निकाह जब हज़रत अली ؑ से किया तो फ़रमाया : **"इलाही मैं इसको और इसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देता हूँ।"**, हज़रत अली ؑ ने भी यही फ़रमाया था (रवाह ईब्ने हिब्बान मिन हदीस अनस ؓ) ज़ाहिर है कि (वालिदा हज़रत मरयम ؑ) की दुआ से रसूलल्लाह ﷺ की दुआ ज़्यादा क़ाबील क़ुबूल है लिहाज़ा मुझे उम्मीद है कि

हज़रत सय्यदा ؑ और आपकी औलाद ؑ को अल्लाह ﷻ ने शैतान से महफ़ूज़ रखा होगा।

(तफ़सीर अरबी में इबारत ये है:

فــارحــواعــصــمتهــا واو لا دهــا من الشيـطـان وعـدم مسـه اياهم

तफ़सीर मज़हरी उर्दू जिल्द दोम, सफ़्हा ३२७, दारुल इशाअत कराची, ज़ेर आयत ३६, आल इमरान)

अब हम दो बुज़ुर्ग उलमा का कलाम नक़ल करके अपनी बात को ख़तम करते हैं। वह दोनों हैं शैख़ अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी ؒ और हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी ؒ।

शाह अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी ؒ तहरीर फरमाते हैं:

مـن زارواحـداً مـن الائـمة كــان كمن زار رسول الله ﷺ۔

"फसल अल ख़िताब" में इमाम जा'फ़र सादिक़ علیہ السلام से रिवायत है कि आपने फ़रमाया जो शख़्स आइम्मा में से किसी इमाम की ज़ियारत करे तो वह शख़्स उसकी तरह होगा जिसने रसूलल्लाह ﷺ की ज़ियारत की"

फिर उन्होंने मन्दर्जाज़ैल (निम्नलिखित) रिवायत बयान की है:

قيل لموسى الرضا رضى الله عنه علمنى قولا بليغا كاملاً اذا زرت واحداً منكم فقال اذا صرت الى الباب فقف واشهد بالشهادتين وانت على غسل واذادخلت ورأيت القبرفقف وقل الله اكبر ثلاثين مرة ثم امش قليلاً وعليك السكينة والوقار وقارب بين خطاء ك ثم قف و كبرالله ثلاثين مرة ثم ادن من القبرو كبر الله اربعين مرة تمام مأة مرة وقل:

السلام عليك يا اهل بيت الرسالة ومختلف الملائكة ومهبط الوحى وخزان العلم ومنتهى الحكم ومعدن الرحمة واصول الكرم وقادة الام وعناصر الابرار ودعائم الاخيار وابواب الايمان وامناء الرحمان وسلالة خاتم النبيين وعترة صفوة المرسلين ورحمة الله وبركاته السلام على الأئمة

الهدى ومصابيح الدجى واعلام التقى وذوى الحجى والنهى ورحمة الله وبركاته السلام على الدعاة الى حكم الله والادلاء على مرضات الله والمظهرين لامرالله ونهيه والمخلصين فى توحيد الله ورحمة الله وبركاته اننى مشفع بكم ومقدمكم امام طلبتى وارادتى ومسئلتى وحاجتى واشهدالله اننى مومن بسركم وعلانيتكم وانى ابرء الى الله تعالىٰ من عدو محمد وآل محمد من الجن والانس صلى الله على محمد وآله الطيبين الطاهرين وسلم تسليما كثيرا. (جذب القلوب الى ديار المحبوب،

(जज़्बुल क़ुलूब इला दयार उल महबूब: सफा: २६३, मतबूआ कलकत्ता, इस किताब का उर्दू तर्जुमा भी दस्तयाब है ।)

''किसी ने मूसा अर रिज़ाﷺसे पूछा कि आप मुझे ऐसा क़ौल तालीम कीजिये जो बलीग और कामिल हो कि जब मैं आप में से किसी की ज़ियारत करूँ तो उसे पढ़ा करूँ. आप ने फरमाया कि जब तुम दरवाज़े पर पहुँचो तो ठहर जाओ, शहादतैन (तौहीद व रिसालत) अदा करो इस हाल में की तुम गुस्ल किये हुए हो और जब तुम अंदर दाख़िल हो कर क़बर देखो तो ठहर जाओ और तीस मरतबा अल्लाहु अकबर कहो फिर क़बर से क़रीब हो कर चालीस मरतबा अल्लाहु अकबर कहो कि सो (१००) मरतबा हो जाए फिर कहो: सलाम हो आप पर ऐ अहले बयत रिसालत और ऐ फरिश्तों की आमदोरफ्त के महल और ऐ वही के उतरने की मक़ाम, ऐ इल्म के ख़ज़ाने और ऐ हिकमतों के मुन्तहा, ऐ रहमत के मअदन ऐ करम की बुनियाद और ऐ उम्मतों की क़यादत करनेवाले, ऐ नेकियों के अनासिर, ऐ साहिबान ख़ैर के सुतूनों, ऐ ईमान के दरवाज़ा और ऐ रहमान के अमानतदार, ऐ ख़ातिमन्नबीय्यीन के फ़रज़न्द और ऐ सफ़वातुल मुरसलीन की इतरत और ख़ुदा की रहमते और बरकतें हों आप पर सलाम हो अइम्मा हिदायत पर, तारीकी के चराग़ों पर, तक़वा के निशानों पर और साहिबान अक़्ल व ज़ेरकी पर और ख़ुदा की रहमतें और बरकतें हों । सलाम हों उनपर जो रहमत इलाही के महल हैं और बरकत इलाही के साकिन हैं और हिकमते इलाही के मुआदिन हैं और सर इलाही के मुहाफ़िज़ हैं और किताब इलाही के हामिलीन हैं और रसूलल्लाह ﷺ के वारिसीन हैं और ख़ुदा की रहमत और बरकतें हों। और सलाम हो उनपर जो हुक्मे इलाही की तरफ दावत देने वाले हैं और जो रहबरी करने वाले हैं रज़ा ऐ इलाही की तरफ और जो ज़ाहिर करने वाले हैं अमर व नही इलाही के और जो मुख़्लिस हैं ख़ुदा की तौहीद में और ख़ुदा की रहमत और बरकते हों। मैं आप लोगों के वसीले

से शफ़ाअत तलब करता हूँ और आगे रखता हूँ आप लोगो को अपनी तलब और अपने इरादे और अपने सवाल और अपनी हाजत में। और मैं अल्लाह ﷻ को गवाह करता हूँ की मैं ईमान रखता हूँ आप लोगों के पोशीदा और ज़ाहिर पर। और मैं बराअत चाहता हूँ अल्लाह ﷻ की बारगाह में मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ के दुश्मन से जिन्न और इंसान दोनों से। अल्लाह ﷻ मुहम्मद ﷺ और उनकी तय्यब व ताहिर औलाद पर अपनी कामिल रहमतों का नुज़ूल करे और उनपर सलामती हो कसरत के साथ।"

इस मोज़ू पर मुजद्दिद अलफसानी शैख़ अहमद सरहिन्दी ﷺ की तहक़ीक़ मुलाहिज़ा फरमाएँ।

"وراھی است کہ بقرب ولایت تعلق دارد: اقطاب واوتادو بدلا ونجباء وعامۂ اولیاء اللہ، بھمین راہ واصل اندراہ سلوک عبارت از ین راہ است بلکہ جذبہ متعارفہ، نیز داخل ھمین است وتوسط وحیلولت درین راہ کائن است وپیشوای، واصلان این راہ وسرگروہ اینھا ومنبع فیض این بزرگواران: حضرت علی مرتضیٰ است کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ، واین منصب عظیم الشان بایشان تعلق دارددرین مقام گویاھر دوقدم مبارک آنسرور علیہ وعلی آلہ الصلوٰۃ...... برفرق مبارک اوست کرم اللہ تعالیٰ وجہہ حضرات فاطمہ وحضرت حسنین رضی اللہ عنہ درینمقام باایشان شریکند ، انکارم کہ حضرت امیر قبل ازنشاءہ عنصرے نیز ملاذ این مقام بودہ اند، چنانچہ بعد از نشاءہ عنصرے وھر کرا فیض وھدایت ازین راہ میرسید بتوسط ایشان میرسید چہ ایشان نزدنقطہ منتھائے این راہ ومرکز این مقام بایشان تعلق دارد، وچون دورہ حضرت امیر تمام شد این منصب عظیم القدر بحضرات حسنین ترتیبا مفوض ومسلم گشت ، وبعد از ایشان بھریکے از ائمہ اثنا عشر علے الترتیب والتفصیل قرار گرفت ودر اعصار این بزرگواران وھمچنین بعد از ارتحال ایشان ھر کرا فیض وھدایت میرسید بتوسط این بزرگواران بودہ وبحیلولۃ ایشانان ھرچند اقطاب ونجبای وقت بودہ باشند وملاذ وملجاء ھمہ ایشان بودہ اند چہ اطراف راغیر ازلحوق بمرکز چارہ نیست۔

(امام ربانی مجدد الف ثانی، مکتوبات، ۳:۲۵۱، ۲۵۲، مکتوب نمبر: ۱۲۳)

"और एक राह वह है जो क़ुरब विलायत से ताल्लुक़ रखती है : इकताब व अवताद और बदला और निजा और आम औलियाह अल्लाह इसी राह से वासिल हैं, और राह सुलूक इस राह से इबारत है, बल्कि मुतारिफ़ जज़्बा भी इसी में दाख़िल है, और इस राह में तवस्सुत साबित है और इस राह के वासिलैन के पेशवा और उनके बुज़ुर्गो के मुंबा फैज़ हज़रत अली अल मुर्तज़ा ﷺ हैं, और ये अज़ीम शान मनसब उनसे ताल्लुक़ रखता है। इस राह में गोया रसूलल्लाह ﷺ के दोनो क़दम मुबारक हज़रत अली ﷺ के मुबारक़ सर पर हैं और हज़रत फातिमा और हज़रात हसनैन करीमैंन ﷺ इस मुक़ाम में उनके साथ शरीक हैं। **मैं ये समझता हूँ कि हज़रत अमीर ﷺ अपनी जस्दी पैदाइश से पहले भी इस मुक़ाम के मलजा व मावा थे, जैसे की आप ﷺ जस्दी पैदाइश के बाद हैं और जिसे भी फैज़ हिदायत इस राह से पहोंची उनके ज़रिये से पहोंची, क्यूंकि वह इस राह के आखिरी नुक़ल्लते के नज़दीक हैं** और इस मुक़ाम का मरकज़ उनसे ताल्लुक़ रखता है, और जब हज़रात अमीर ﷺ का दौर ख़त्म हुआ तो ये अज़ीम उल क़दर मनसब तरतीबवार हज़रत हसनैन करीमैन ﷺको सुपुर्द हुआ और उनके बाद वही मनसब अइम्मा असना अशरा में से हर एक को तरतीबवार और तफ्सील से तफ़वीज़ हुआ, और इन बुज़र्गों के ज़माने में और इसी तरह इनके इंतेक़ाल के बाद जिस किसी को भी फैज़ और हिदायत पहुंची है इन्ही बुज़ुर्गो के ज़रिये पहुंची है, अगरचे अक़ताब व निजबाए वक़ल्लत ही क्यों न हो और सबके मलजा व मावा यही बुज़र्ग हैं क्यूंकि अतराफ़ को अपने मरकज़ के साथ इल्हाक़ किये बग़ैर चारा नहीं है"।

हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी ﷺ फरमाते हैं की, "इमाम मेहदी ﷺ भी कार विलायत में हज़रत अली मुर्तज़ा ﷺ के साथ शरीक होंगे।

(इमाम रब्बानी मुजद्दिद अल्फेसानी, मक्तूबात, ३:२५१, २५२, मकतूब नंबरः १२३)

हमने इस किताब में मुख़्तसर तोर पर अइम्मा अहले बयत का तआरुफ़ अल्लामा ज़हबी की किताब "**सैर आलाम अल नुबला**" से लिया है और बाज़ जगह पर इज़ाफ़ा भी किया है। इस किताबचे को पढ़ने के बाद अइम्मा-ए-अहले बयत की अज़्मत और ऐहमियत का एहसास होगा। आज भी मस्जिद नबवी शरीफ (मदीना मुनव्वरा) की दीवारों पर अइम्मा असना अशरा के नाम कुन्दा हैं। अल्लाह पाक (ﷻ) दीन की सहीह माअरफ़त नसीब फरमा ।

तालिबे शफ़ाअत रसूलल्लाह ﷺ
ख़ुसरो क़ासिम

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अइम्मा ए अह्ले बयत के बारे में अल्लामा ज़हबी के अक़्वाल:

(1)

(۱) فمولانا الإمام عليٌّ من الخلفاء الراشدين، المشهود لهم بالجنة ،نحبه ونتولاه...وابناه الحسنٌ والحسينٌ فسبطا رسول الله ﷺ وسيدا شباب أهل الجنة ،لو استخلفا لكانا أهلاً لذلك .

(१) हज़र.. अली ؓ और हज़रत हसन ؓ व हज़रत हुसैन ؓ के बारे में:

"मौला अली ؓ ख़ुलफ़ा राशिदीन में से हैं, आप उन लोगो में से हैं जिन्हे जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई, हम उनसे मुहब्बत करते हैं, उनसे दोस्ती रखते हैं, और उनके दोनों साहबज़ादे हज़रत हसन ؓ और हुसैन ؓ रसूलल्लाह ﷺ के सिब्त (नवासे) और नौजवानाने जन्नत के सरदार हैं, अगर उन दोनों को भी ख़लीफ़ा बनाया जाता तो वह उसके अहल थे।"

(2)

(٢) وقال في ترجمة الإمام على بن الحسين زين العابدين : وكان له جلالة عجيبة ،وحق له والله ذلك ،فقد كان أهلاً للإمامة العظمى لشرفه وسؤدده وعلمه وتألهه وكمال عقله .

(२) हज़रत ईमाम अली ईब्ने हुसैन ज़ैन उल आबिदीन ؓ के बारे में: "इमाम ज़ैन उल आबिदीन ؓ बहुत जलील उल क़दर शख़्सियत के मालिक थे, और जलालत क़दर उनका हक़ था, बेशक वो अपनी अज़मत, सरदारी, इल्मोंफज़ल, ख़ुदा तरसी और अक़्ली कमाल व पुख़्तगी की वजह से इमामत उज़्मा (ख़िलाफ़त) के अहल और हक़दार थे।

(3)

(٣) وقال في ترجمة الإمام أبي جعفر الباقرؒ :وكان أحد من جمع بين العلم والعمل والسؤدد والشرف والثقة والرزانة ،وكان أهلاً للخلافة .

(३) **इमाम बाक़िर ؓ के बारे में:** “आप उन लोगों में से थे जो इल्म व अमल, सियादत व फ़ज़ीलत और क़ुव्वत व सकाहत के जामिआ थे, और आपके ख़िलाफ़त के अहल थे।”

(4)

(٤) وقال في ترجمة الإمام جعفر الصادقؒ : مناقب جعفر كثيرة ،وكان يصلح للخلافة ،لسؤدده وفضله وعلمه وشرفه.

(४) **इमाम जाफ़र सादिक़ ؓ के बारे में:** “इमाम जाफ़र ؓ के मनाक़िब बहुत से हैं, आप ؓ अपनी सियादत व फ़ज़ीलत और इल्म व शरफ़ की वजह से ख़िलाफ़त के लायक थे।”

(5)

(٥) وقال في الإمام موسى بن جعفرؒ : كبير القدر ،جيد العلم ، أولى بالخلافة من هارون الرشيد.

(५) **इमाम मूसा काज़िम ईब्ने बाक़र ؓ के बारे में:** “आप बड़े अज़ीम मर्तबे और बहुत ज़्यादा इल्म वाले थे, हारुन रशीद से ज़्यादा ख़िलाफ़त के मुस्तहिक़ थे।”

(6)

(٦) وقال في ترجمة الإمام علي بن موسى الرضاؒ : وقد كان علي الرضا كبير الشأن ،أهلاً للخلافة .

(६) **इमाम अली ईब्ने मुसा रज़ा ؓ के बारे में:** “हज़रत अली रज़ा ؓ अज़ीम शान के मालिक थे, और ख़िलाफ़त के अहल थे।

अइम्मा असना अशरा (बाराह ईमाम)

अइम्मा असना अशरा इल्म व फज़ल, ज़ुहद वर और बचपन से आखिर उम्र तक इबादत व दुआ और तिलावत क़ुरान में मशगूल होने नीज़ उनकी पाबन्दी करने में मशहूर व मअरूफ़ हैं, और इनके बारे में "हल अता" आयते तत्हीरा, उनकी मुहब्बत को वाजिब करने वाली आयत और आयत इब्तिहाल वग़ैरा नाज़िल हुईं, हज़रत अली ؑ जिहाद और जंग की आज़माइश के बावजूद एक हज़ार रकअतें पढ़ते थे और क़ुरान की तिलावत करते।

(1) सैय्यदना मौला-ए-काएनात इमाम अली इब्ने अबू तालिब ؑ

इन बारह इमामों में सबसे पहले हज़रत अली ؑ हैं, जो आयत "व अनफुसना व अन्फुसकुम" में "अनफुसना" में दाखिल हैं, आप ﷺ ने उनसे मुवाख़ात की, और अपनी बेटी से उनकी शादी की, आपके फ़ज़ाइल बेशुमार हैं, बहुत सी करामाते आपसे ज़ाहिर हुईं, हत्ता कि बाज़ लोगों ने आपके बारे में रबूबियत का दावा किया तो आपने उनको क़तल करा दिया।

(2) सैय्यदना इमाम हसन मुजतबा इब्ने अली ؑ

(3) सैय्यदना इमाम हुसैन इब्ने अली शहीदे करबला ؑ

आपके दोनों साहबज़ादे हुज़ूर ﷺ के सिब्त थे, और आप ﷺ के इरशाद के मुताबिक़ नौजवनाने जन्नत के सरदार और उनके इमाम हैं, दोनों अपने ज़माने में सबसे बड़े ज़ाहिद और आलिम थे, अल्लाह ﷻ के रास्ते में जिहाद करते रहे, ता आं कि शहीद हो गए, हज़रत हसन ؓ अपने शानदार कपड़ों के नीचे ऊन (के कपडे) पहनते थे, और इसके बारे में किसी को एहसास भी न होने देते, एक दिन हुज़ूर ﷺ ने हज़रत हुसैन ؑ अपनी दाएं रान पर बिठाया और अपने साहबज़ादे हज़रत इब्राहिम ؑ को बाएं रान पर, तो हज़रत जिबरईल ؑ तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया: "अल्लाह ﷻ आपके लिए दोनों को जमा नहीं करेगा, आप उनमे से जिसे चाहे मुन्तख़ब कर लें", तो आप ﷺ फ़रमाया कि "अगर हुसैन ؑ की वफ़ात होगी तो उस पर मैं, फातिमा और अली (तीनों लोगों) आँसू बहाएंगे, और अगर इब्राहिम ؑ की वफ़ात होगी तो (सिर्फ) मैं रोऊँगा", चुनाँचे आप ﷺ ने हज़रत इब्राहिम ؓ की वफ़ात को इख़्त्यार किया, और तीन दिन के बाद ही उनकी वफ़ात हो गई, फिर उसके बाद जब भी हज़रत हुसैन ؓ आते तो आप ﷺ उनका बोसा लेते और फरमाते: "खुश आमदीद हो उसको जिस पर मैंने अपने बेटे इब्राहिम ؑ को क़ुर्बान कर दिया।"

(4) सैय्यदना इमाम अली ज़ैन उल आबिदीन इब्ने हुसैन ؑ

और हज़रत ज़ैनउल अबिदीन हुसैन बिन अली ؓ दिन को रोज़ा रखते, रात को नमाज़ पढ़ते, क़ुरान की तिलावत करते, रोज़ना एक हज़ार रकते पढ़ते, और हर दो रकतों के बाद हुज़ूर ﷺ और अपने आबा से मन्क़ूल दुआएं पढ़ते, फिर बेचैन व तंग वाले शख़्स की तरह

सहीफ़ा रख कर कहते: **‘मैं कहाँ और अली ﷺ की इबादत कहाँ!! बहुत ज़्यादा रोया करते, हत्ता कि रोने की वजह से रुख़सारों पर लकीर बन गई थी, इतने सजदे किये कि उन्हें "ज़ू असफ़नात" कहा गया, (या'नी आपके आज़ा सजदा पर कसरत सुजूद की वजह से ऊँट के घाटों की तरह घटे पड़ गए थे) और आप ﷺ ने उनको ‘सय्यदुल आबिदीन’ का लक़ब दिया।**

हिशाम बिन अब्दुल मालिक ने हज किया तो उसने इस्तेलाम की कोशिश की, लेकिन भीड़ की वजह से वो ऐसा न कर सका, फिर हज़रत ज़ैन उल आबिदीन ﷺ तशरीफ़ लाए तो लोग किनारा हो गए, और आपने आराम से इस्तेलाम किया, और आपके इलावा **‘हजर अस्वद’** के पास कोई भी न बचा, हिशाम ने पुछा, “ये कौन है?” तो फ़र्ज़दक ने ये अशआर कहे:’

هذا الذى تعرف البطحاء وطأته

والبيت يعرفه والحل والحرم

“ये वो मुक़द्दस शख्सियत है की जिसके नक़्श क़दम को वादी-ए-बत्हा (मक्का मुकर्रमा) पहचानती है, और बयत उल्लाह या'नी काबा और हल व हरम सब उनको जानते पहचानते हैं।”

هذا ابن خير عباد الله كلهم

هذا التقى النقى الطاهر العلم

“यह तो इस ज़ात गिरामी के लख़्ते जिगर हैं, जो अल्लाह ﷻ के तमाम बन्दों में सबसे बहतर हैं, या'नी हुज़ूर ﷺ, ये परहेज़गार तक़वा वाले, पाकीज़ह साफ़ सुथरे और क़ौम (क़ुरैश) के सरदार हैं।”

يكاد يمسكه عرفان راحته

ركن الحطيم اذا ماجاء يستلم

“रुक्न हतीम हो सकता है की उन्हें उनकी हथेली को पहचान कर रोक ले, जब वो हजरे अस्वद का बोसा लेने आते हैं।”

اذا رأته قريش قال قائلها

الى مكارم هذا ينتهى الكرم

"जब इनको क़बीला क़ुरैश के लोग देखते हैं तो कहने वाला यही कहता है की, उनकी सख़ावत पर सख़ावत ख़तम है।"

ان عـد أهـل التـقى كـانـوا أئـمتهم

أو قيـل مـن خيـر خـلـق الله ؟قيل :هم

"अगर अहले तक़वा को शुमार किया जाये तो ये मुत्तिकीयों के इमाम नज़र आयेंगे, अगर रुए ज़मीन पर बसने वालो में सबसे बेहतर अफ़राद के बारे में सवाल किया जाए तो यही सबसे बेहतर होंगे ।"

هـذا ابـن فـاطـمة ان كنت جاهله

بـجـده أنبيـاء اللـه قد ختموا

"यह फातिमा ﷺ के पोते हैं, अगरचे तुम उन्हें पेहचानने से इन्कार करते हो, इनके जद्दे अमजद सबसे आख़िरी नबी हैं ।"

يـغضى حياء ويغضى من مهابته

فـمـا يـكـلـم الا حيـن يبتسم

"यह अपनी तबई हयादारी और शर्म की वजह से आँखें झुकाए रखते हैं, और लोग उनके रोअब व दबदबे की वजह से आँखे नीची रखते हैं ।और उनसे सिर्फ उस वक्त बात की जा सकती है जब आप मुस्करा रहे हों ।"

يـنشـق نـور الهـدى عـن صبـح غـرتـه

كـا لشـمـس تـنـجـاب عن اشراقها الظلم

"नूर हिदायत उनके नूर जबीं से फूटता है, जैसे सूरज के चमकने से तारीकियाँ छट जाती हैं ।"

مـنشـقة مـن رسـول اللـه نبعتـه

طـابـت عناصره والخيم والشيم

"इनकी नस्ल रसूलल्लाह ﷺ से फूटती है, उन की तबियत और अख़लाक़ व आदात सब पाकीज़ह हैं ।"

اللـــه شـرفـه قـدمـاً وفـضـلـه
جـزى بـذاك لـه فـى لوحة القلم

"अल्लाह ﷻ ने पहले ही से इन्हें शरफ़ व फ़ज़ीलत से नवाज़ रखा है। उन के लिए यही काफी है की उनकी फ़ज़ीलत लोहे महफ़ूज़ में लिखी हुई है।"

مـن مـعشـر حبهـم ديـن وبغضهم
كـفــروقــربهـم مـلـجـأومعتصم

"उनकी मुहब्बत दीन और उनसे बुग्ज़ कुफ्र है। इनका क़ुरब पनाह गाह और जाए हिफाज़त है।"

لا يستـطيـع جـواد بـعد غـايتهم
ولا يــدانهيـم قـوم وان كـرمـوا

"कोई सख़ी इनकी अज़मत तक नहीं पहुँच सकता। सख़ावत में कोई क़ौम इनकी हमसरी नहीं कर सकती।"

هـم الـغيـوث اذا مـا أزمة أزمـت
سيـان ذلك ان أثـروا وان عدموا

"और जब कोई (कहेता कि) मुसीबत आती है तो यह (सख़ावत के) बादल बन जाते हैं। इनके लिए बराबर है, ख़ुवाह वह मालदार हों या मोहताज हों।"

مـــا قـــال لا قـط الا فـى تشهـده
لـــولا التشهــد كـانـت لاؤه نـعـم

"इन्होने कभी सिवा तशहुद के "ला" (नहीं) नहीं कहा अगर तशहुद न होता तो इनका "ला" भी "नअम" (हाँ) होता।"

يستـدفـع السـوء والبلوى بـحبهم
ويستــرق بـــه الاحســان والنعم

"इनके तुफैल बलाएँ टलती और मुसीबतें दूर होती हैं, और इनके ज़रिए ख़ुदा की नेअमतें और नवाज़िशें उतरती हैं ।"

مقدم بعد ذكر الله ذكرهم
في كل بر ،ومختوم به الكلم

"अल्लाह ﷻ के ज़िक्र के बाद इन्ही का ज़िक्र तमाम मख़्लूक़ में सबसे मुक़द्दम होता है, और इन्ही पर बात ख़त्म होती है ।"

من يعرف الله يعرف أولوية ذا
الدين من بيت هذا ناله الأمم

"जो कोई अल्लाह ﷻ की माअरफ़त रखता है वह इनकी फ़ज़ीलत का मुअतरिफ है, इन्ही के घराने से उम्मतों को दीन की नेअमत मिली है।"

وليس قولك من هذا بضائره
العرب تعرف من أنكرت والعجم

"तुम्हारा ये कहना की "यह कौन हैं", उन्हें कुछ नुकसान नहीं पहुचां सकता, जिसे तुम नहीं पहचान रहे हो उसे अरब व अजम सब पहचानते हैं।"

जब हिशाम ने ये अशआर सुने तो सख़्त ग़ज़बनाक हुआ और फ़र्ज़दक को क़ैद करने का हुक्म दे दिया, हज़रत ज़ैन उल आबिदीन ﵁ ने फ़र्ज़दक के पास एक हज़ार दीनार भेजे तो उसने यह कर वापस कर दिए की मैंने ये अशआर अल्लाह ﷻ और उसके रसूल ﷺ के लिए कहे थे, मैं इन की उजरत नहीं ले सकता, तो हज़रत ؑ ने फ़रमाया: "हम अहले बयत के हाथ से जो कुछ निकल जाता है तो हम उसे वापस नहीं लेते, चुनाँचे फ़र्ज़दक ने फिर उन दीनार को क़ुबूल कर लिया।"

मदीना में कुछ लोग थे जिनका रिज़्क़ रात में उनके पास पहुँच जाता था, और उन्हें पता नहीं चलता की कौन भेजता है, जब हज़रत ज़ैन उल आबिदीन ﵁ का इन्तक़ाल हो गया तो रिज़्क़ का सिलसिला मुन्क़ते हो गया, उस वक़्त उन्हें पता चला की हज़रत की तरफ से आता था ।

(5) सैय्यदना इमाम मुहम्मद बाक़र इब्ने अली इब्ने हुसैन ؑ

आपके साहबज़ादे **मुहम्मद बाक़र** ؑ हैं, जो बहुत बड़े ज़ाहिद व आबिद थे, सजदों से पेशानी पर निशान पड़ गए थे, अपने ज़माने के सबसे बड़े आलिम थे, रसूलल्लाह ﷺ ने उनका नाम '**बाक़र**' रखा था।

हज़रत जाबिर ﵁ उनके पास आए जबकि वो छोटे थे और कहा: 'आपके जद्दे मोहतरम हुज़ूर ﷺ ने आपको सलाम कहा है', तो आपने जवाब दिया: 'मेरे जद्दे मोहतरम पर

भी सलाम हो,' हज़रत जाबिर ﷺ से पुछा गया: 'ये कैसे मुमकिन है?' (इसलिए कि आप ﷺ की वफ़ात हो चुकी थी) तो फ़रमाया: मैं रसूलल्लाह ﷺ के पास बैठा हुआ था और हज़रत हुसैन ؑ आपकी गोद में थे, आप ﷺ उनके साथ खेल रहे थे, तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ जाबिर! ؓ इसके यहाँ एक बच्चा होगा जिसका नाम अली ؑ होगा, जब क़यामत का दिन होगा एक मुनादी पुकारेगा: 'सैय्यद उल आबिदीन' खड़े हो जाएँ, तो इनका वही लड़का खड़ा होगा, फिर उसके यहाँ एक बच्चा होगा, जिसका नाम 'बाक़र' होगा, वो इल्म को फाड़ेगा या'नी हासिल करेगा, अगर तुम उसे पाओ तो उससे मेरा सलाम कहना।"

हज़रत बाक़र ؓ से इमाम अबू हनीफा ؒ वग़ैरा ने रिवायत की है।

(6) सैय्यदना इमाम जा'फर सादिक़ इब्ने मुहम्मद बाक़र ؑ

आप के साहबज़ादे हज़रत जा'फ़र सादिक़ ؓ हैं, जो अपने ज़माने में सबसे अफ़ज़ल और सबसे ज़्यादा इबादत गुज़ार थे, उलमा सीरत ने कहा है: "वह रियासत (हुकूमत) से बचने के लिए इबादत में मशगूल हो गए," अमरो बिन अबी मिक़दाम कहते हैं: "मैं जब जा'फ़र ؑ को देखता तो मुझे यक़ीन हो जाता कि वो अम्बिया की नस्ल से हैं।"

आप ही से इमामिया की फ़िक़ह की नशर व इशाअत हुई, और हक़ीक़ी माअर और यक़ीनी अक़ाइद फैले आप (इल्हाम की रौशनी में) जो खबर देते (अल्लाह ﷻ के हुक्म से) ऐसा हो जाता, इसी वजह से लोगों ने आपका नाम सादिक़ व अमीन रख दिया।

(7) सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम इब्ने जा'फर सादिक़ ؑ

आपके साहबज़ादे **हज़रत मूसा काज़िम** ؓ थे, जिन्ह **अब्द सालिह** कहा जाता था, अपने वक़्त के सबसे बड़े इबादत गुज़ार थे, दिन में रोज़ा रखते, रात को नमाज़े पढ़ते, आपको 'काज़िम' इस वजह से कहा जाता है कि आपको किसी के बारे में कोई बात पहुँचती तो आप उसके पास माल भेजते, आपकी फ़ज़ीलत का इतराफ़ मुवाफ़िक़ व मुख़लिफ़ सबको है।

इब्न जौज़ी ؒ शफ़ीक़ बल्खी से रिवायत करते हैं: १४९ हिजरी में मैं हज के लिए निकला: कादसिया में क़याम किया, देखा की एक खूबसूरत, गन्दमगू, नौजवान है, जिसके बदन पर ऊनी कपडे हैं, और चादर पहने हुए है, पैरों में दो चप्पल हैं, और लोगो से अलग थलग बैठा है, मैंने दिल में सोचा: ये नौजवान सूफ़िया में से है, जो लोगो पर बोझ बनना चाहता है, अल्लाह ﷻ की क़सम! मैं इसके पास जा कर तौबैख़ (धमकी देना) करूँगा, मैं उसके क़रीब गया, जब उसने मुझे आते हुए देखा तो कहा: "ऐ शफ़ीक़!

"اجتنبوا كثيراً من الظن، ان بعض الظن اثم"

(बहुत ज़्यादा (बुरे) गुमान से बचो, इसलिए कि कुछ गुमान गुनाह होते हैं।)

"तो मैंने अपने दिल में ये सोचाः यह नौजवान कोई बुज़ुर्ग है, जिसने मेरे दिल की बात पढ़ ली, मैं इसके पास जाकर अपने किये की माफ़ी मांगूगा, लेकिन वह मेरी निगाहों से ओझल हो गया, जब हम "वाक़िसा" पहुँचे तो मैंने उसे नमाज़ पढ़ते हुए देखा, इसके अज़ा हिल रहे थे और आँसू बह रहे थे, मैंने सोचा कि इसके पास जा कर माज़रत करूँ, उसने अपनी नमाज़ पूरी कर के कहाः "ए शफ़ीक़!

"وانی لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحاً ثم اهتدی"

("मैं बहुत ज़्यादा तौबह क़ुबूल करने वाला हूँ उसकी जो तौबह करे,
ईमान ले आए और नेक अमल करे, फिर वह हिदायत पर भी रहे")

मैंने कहाः 'ये अबदाल है, जो दो मरतबा मेरे राज़ से वाक़िफ़ हो गया।'

जब हम "ज़ुबाला" पहुँचे तो मैंने देखा की वह एक कुँवे पर खड़ा है, उसके हाथ में छागल थी जिससे वो पानी पीना चाह रहे थे, वह छागल उसके हाथ से पानी में गिर गई, उसने आसमान की तरफ अपनी निगाह उठा कर कहाः तू मेरा रब है, जब मुझे प्यास लगती है जब भी, और जब मुझे भूक लगती है तो भी मुझे रोज़ी देता है, ऐ मेरे आक़ा! इस छागल के इलावा मेरे पास कुछ और नहीं है।" शफ़ीक़ कहते हैं: "अल्लाह ﷻ की क़सम! मैंने देखा कि कुवें का पानी ऊपर को आया तो उसने छागल लेकर उसे भरा, वुज़ू किया और चार रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर वहीं क़रीब रेत के एक टीले के पास गया, और अपने दोनों पंजे मिला कर उस छगाल में ले जा कर पानी पीने लगा।" मैंने कहाः 'जो रिज़्क़ अल्लाह ﷻ ने आपको दिया है उसमें से मुझे भी खिलाईये।' तो उसने कहाः "ऐ शफ़ीक़! अल्लाह ﷻ की ज़ाहिरी और बातिनी नेअमतें हम पर हमेशा रहती हैं, तो तुम अपने रब के साथ अच्छा गुमान रखो।" फिर उसने मुझे वो छागल दी, तो मैंने इसमे से पिया, क्या देखता हूँ के वो तो सत्तू और शकर है, अल्लाह ﷻ की क़सम! मैंने इससे ज़्यादा लज़ीज़ और इस से ज़्यादा खुशबूदार कोई चीज़ नहीं पी, मैं इतना सैराब हो गया के कई दिन तक खाने पीने कि ख़्वाहिश ना हुई।

फिर वो नौजवान मुझे नज़र नहीं आया, हत्ता कि मैं मक्का पहुँच गया, तो मैंने क़ुब्ता अस्सराब के बराबर में आधी रात को खुशूऊ और आहो व बुका के साथ नमाज़ पढ़ते हुए देखा, वह पूरी रात इसी तरह रहा, जब तुलुऊ फजर हो गई तो अपनी जगह बैठ कर तस्बीह पढ़ने लगा, फिर नमाज़ फजर पढ़ी और बयत उल्लाह का तवाफ़ किया, फिर जब वह चला तो मैं उसके पीछे पीछे गया, तो देखा कि उसके नौकर चाकर और काफ़ी माल व दौलत है, जो कुछ रास्ते में देखा अब उस के बिल्कुल बरख़िलाफ़ नज़रिया,लोग उसके गिर्द चक्कर लगा रहे थे, उसे सलाम करते और उससे बरकत की दुआएँ लेते, मैंने किसी से पुछा की 'ये कौन नौजवान है?' तो उसने बताया की "ये मूसा बिन जाफ़र عليه السلام हैं," तो मैंने कहाः 'इस तरह के अजाईबात इसी जैसे सय्यद के लिए हो सकते हैं।'

(रवाहु अल हम्बली)

आप ही के हाथ पर हज़रत बशर हाफ़ी ने तौबह की, इसी तरह के एक बार आप बग़दाद में उनके घर के पास से गुज़रे तो गाने बजाने की आवाज़े सुनी, एक बाँदी निकली जिसके हाथ में सब्ज़ी के छिलके थे, उसने वह कूड़ा रास्ते में फेक दिया, आपने उस से पुछाः 'इस घर का मालिक गुलाम है या आज़ाद?' उसने कहाः 'आज़ाद है,' आपने फ़रमायाः 'तू ने सच कहा, अगर वो गुलाम होता तो अपने मौला से डरता,' जब वो बाँदी अपने घर में चली गई तो उसके मालिक ने जो उस वक़्त दस्तरख़्वान पर बैठा था पुछाः 'देर कैसे हो गई?' उसने कहाः "मुझे एक शख़्स ने ऐसे ऐसे बताया", वह शख़्स नंगे पैर निकला और हज़रत काज़िम से मुलाक़ात की, और आपके हाथ पर तौबह की ।

(8) सैय्यदना इमाम अली रजा इब्ने मूसा काज़िम

आप (इमाम मुसा काजिम) के साहबज़ादे **हज़रत अली रज़ा** थे, जो अपने ज़माने के बहुत बड़े ज़ाहिद और साहिबे इल्म थे, जमहूर फुक़्हा ने आपसे बहुत ज़्यादा अख़्ज़ किया है, मामून ने आपके इल्मी फज़्ल व कमाल की वजह से आपको वली अहद बनाया था ।

एक दिन आपने उसके भाई ज़ैद को नसीहत करते हुए फ़रमायाः तुम रसूलल्लाह को क्या जवाब दोगे अगर ख़ूनरेज़ी करोगे और नाजाईज़ तरीके से माल हासिल करोगे? कूफ़ा के बेवक़ूफ़ लोगो ने तुम्हे धोके में डाल रख्खा है, रसूलल्लाह का इरशाद हैः "फातिमा ने अपनी अस्मत की हिफाज़त की तो अल्लाह ने उसकी ज़ुर्रीयत को आग पर हराम कर दिया, अल्लाह की क़सम! उन्हें ये बात सिर्फ अल्लाह की इताअत की वजह से हासिल हुई, अगर तुम चाहते हो जो चीज़ उन्होंने अल्लाह की इताअत के ज़रिये हासिल की तुम उसकी नाफ़रमानी के ज़रिये हासिल कर लो तो तुम अल्लाह के नज़दीक उनसे ज़्यादा मुकर्रम होगे।

मामून ने दिरहम व दीनार पर आपका नाम कुन्दह कराया था और आपकी बयत के बारे में दूर दराज़ फरमान जारी करा दिए थे।"

अबू नवास से कहा गया कि तुम रज़ा की मदह में अशआर क्यों नहीं कहते? तो उसने कहाः

قيل لى أنت أفضل الناس طراً
فى المعانى وفى الكلام البديه
لك من جوهر الكلام بديع
يثمر الدر فى يدى مجتنيه

فلما اذا تركت مدح ابن موسى
والخصال التى تجمعنّ فيه
قلت:لا أستطيع مدح امام
كان جبرئيل خادماً لأبيه

"मुझ से कहा गया कि तुम इल्म मआनी और बरजस्ता कलाम में सबसे अफ़ज़ल हो। तुम जो कलाम कहते हो वह अनोखा और लाजवाब होता है, जो सुनने वालो के हाथो को मोतियों से भर देता है।

तो फिर तुमने इब्न मूसा عليه السلام की मदह क्यों तर्क कर रखी है, और उनके उन अख़्लाक़ व आदत को बयान करना क्यों छोड़ दिया है जो उनकी ज़ात में जमाअ हैं।

तो मैंने कहा की मैं उस इमाम عليه السلام की मदह कैसे करूँ! जिबरईल عليه السلام जिसके वालिद के ख़ादिम थे।"

(9) सैय्यदना इमाम मुहम्मद जव्वाद इब्ने अली रज़ा عليه السلام

आपके (इमाम अली रज़ा عليه السلام) साहबज़ादे हज़रत मुहम्मद जव्वाद عليه السلام थे, जो इल्म तक़वा व सख़ावत में अपने वालिद के नक़्श क़दम पर थे, जब आपके वालिद रज़ा عليه السلام की वफ़ात हो गई तो मामून बावजूद आपकी कमसिनी के आपके इल्म व दीनदारी और वफौर अक़्ल का शैदाई हो गया, और चाहा कि अपनी बेटी उम्मे अलफ़ज़्ल से आपका निकाह कर दे, और आपके वालिद रज़ा से उसने अपनी बेटी उम्मे हबीब का निकाह किया था, तो अब्बासियों पर यह बात गिरान गुज़री और उन्होंने उसे बहुत बड़ा समझा, उन्हें इस बात का अन्देशा हुआ कि के कहीं हुकूमत उनके हाथ से न निकल जाए, तो मामून के क़रीबी लोग जमा हुए और इस इरादेह को तर्क करने की दरख़्वास्त की और कहा की के वो छोटा है, उसके पास इल्म नहीं है, तो मामून ने कहा: "मैं इसे ज़्यादा जानता हूँ, अगर तुम चाहो तो इसका इम्तेहान ले लो," वह लोग इस पर राज़ी हो गए, और उन्होंने यहया बिन अकसम को ख़ूब सारा माल दिया ताकि वह इससे मसअले में आपको उलझायें जिसका आप जवाब न दे सकें, और एक दिन तय कर लिया गया, मामून ने आपको बुलवाया, क़ाज़ी और अब्बासियों की एक जमात भी हाज़िर हो गई, क़ाज़ी ने कहा: "मैं तुमसे एक चीज़ के बारे में सवाल करूँगा?" आप عليه السلام ने फ़रमाया: "पूछो।", उसने पुछा: "आप उस मेहरम (अहराम पहने हुए शख़्स) के बारे में क्या कहते हैं जिसने शिकार को क़तल कर दिया?"

आप عليه السلام ने फ़रमाया: "उसने हल में उसे क़तल किया है या हरम में? वह इस मस्ले को जानता था या उससे जाहिल था? जान बूझकर क़तल किया या यूँ ही हो गया? वह शिकार छोटा था या बड़ा? मेहरम आज़ाद था या गुलाम? बालिग़ था या नाबालिग? वह शिकार परिंदा था या कुछ और ?

यह सुन कर यह्या बिन अकसम हैरान रह गए, और उनके चेहरे पर आजिज़ी के आसार ज़ाहिर हो गए, हत्ता के अहले मजलिस की एक जमात ने इस बात को महसूस कर लिया, तो मामून ने अपने घर वालो से कहा:" "अब तुम उसे पहचान गए हो जिस से नवाकिफ़ थे?" "फिर वह आपकी तरफ मुतवज्जो हुआ और फ़रमाया: "क्या आप मंगनी पर राज़ी हैं?" आपने फ़रमाया: "जी हाँ," तो उस ने कहा: "आप ख़ुद ख़ुत्बा ऐ निकाह पढ़िए", चुनाँचे हज़रत ने ख़ुत्बा निकाह पढ़ा और पाँच सो उम्दह दिरहम पर उक़्द हो गया, जो की हज़रत फातिमा ﷺ अन्हा का महर था, फिर शादी हो गई ।

(10) सैय्यदना इमाम अली हादी इब्ने मुहम्मद जव्वाद ﷺ

आप (मुहम्मद जव्वाद ﷺ) के साहबज़ादे हज़रत अली हादी ﷺ थे, जिन्हें "**असकरी** कहा जाता है, इसलिए की मुतवक्किल ने आपको मदीना से बग़दाद भेज दिया था, फिर वहाँ से "सरमनराइ" चले गए थे, और उसके क़रीब एक जगह जिसका नाम "अस्कर" था वहाँ मुक़ीम हो गए थे, फिर "सरमनराइ" मुनतक़िल हो गए और वहाँ बीस साल नो महीने क़ियाम किया, मुतवक्किल ने आपको इसलिए निकाला था कि वह अली हादी ﷺ से बुग्ज़ रखता था, उसे पता चला कि आप मदीना में मुक़ीम हैं और लोग आपकी तरफ माईल हो रहे हैं, तो उसे आपकी तरफ से ख़ौफ पैदा हुआ, उसने यह्या बिन हरमसा को बुला कर आपको निकालने का हुक्म दिया, अहल मदीना ने इस पर ख़ूब आँसू बहाए, क्यूँकि आप उनके मुहसिन थे, और हमेशा मस्जिद में इबादत के लिए रहते, तो यह्या ने क़सम खा कर कहा के इनके साथ कोई बुराई नहीं होगी, फिर उसने आपके घर की तफ़तीश की तो उसमें चंद मसाहिफ और किताबों के सिवा कुछ न मिला, इस से उसके नज़दीक आपकी अज़मत और बढ़ गई, जिसकी वजह से आपकी ख़िदमत का ज़िम्मा ख़ुद उसने अपने ऊपर लिया, जब वह बग़दाद आया तो सबसे पहले वाली-ए-बग़दाद इस्हाक़ बिन इब्राहिम ताहिरी के पास गया, तो उसने कहा: ऐ यह्या ! : ये हुज़ूर ﷺ की औलाद में से हैं, और तुम मुतवक्किल को जानते ही हो, अब अगर तुमने उसे उनके खिलाफ उभार दिया तो वह उन्हें क़तल कर देगा, और तुम रसूल ﷺ के **हद्दे मुक़ाबिल ठहरोगे**, तो यह्या ने उससे कहा: "मैंने उनकी तरफ से ख़ैर के सिवा कुछ नहीं देखा ।"

यह्या कहते हैं: जब मैं मुतवक्किल कि पास पहुँचा तो उसे आपकी हुस्न सीरत ज़ुहद वदाअ की तारीफ़ की, तो मुतवक्किल ने आपका इकराम किया।

फिर मुतवक्किल बीमार हुआ तो उसने नज़र मानी के अगर वह ठीक हो गया तो बहुत से दराहिम सदक़ा करेगा, उसने फिर फुक़हा से उसके बारे में पुछा, लेकिन वह जवाब न दे सके, तो उसने हज़रत हादी ﷺ के पास पूछने के लिए भेजा तो आपने फ़रमाया: "तेरासी दिरहम सदक़ा कर दो," मुतवक्किल ने सबब दरयाफ्त किया तो फ़रमाया: "इसलिए कि अल्लाह ﷻ का इरशाद है ।"

"لقد نصركم الله فى مواطن كثيرة"

(अल्लाह ﷻ ने तुम्हारी बहुत से मौक़ों पर मदद की) और ये मौक़े तेरासी ही थे, इसलिए कि आप ﷺ ने सत्ताईस ग़ज़वे किये और छप्पन सरये, कुल मिला कर तेरासी थे।

मसऊदी कहते हैं: मुतवक्किल से चुगली की गई के अली बिन मुहम्मद के घर में हथियार हैं, और वह हुकूमत का इरादह रखते हैं, तो उसने तुर्कों की एक जमात को भेजा, उन्हों ने जा कर रात में आपके घर धावा बोला, लेकिन उन्हें कुछ न मिला, और आपको बंद घर में पाया, आप क़ुरआन पढ़ रहे थे और एक ऊन की चादर थी, और आप कंकरी और रेत पर बैठे हुए अल्लाह ﷻ की तरफ मुतवज्जो हो कर तिलावत में मशगूल थे, इसी हालत में आपको मुतवक्किल के पास ले जाया गया, जिस वक़्त आपको उसके पास पहुँचाया गया वह शराब की मजलिस में था और मुतवक्किल के हाथ में जाम था, उसने आपकी तआज़ीम की वजह से आपको अपने बराबर में बैठाया, और आपकी तरफ जाम बढ़ाया, तो आपने फ़रमाया: "मेरे ख़ून और गोश्त में कभी शराब नहीं गई, मुझे माफ़ कीजिए," तो उसने मजबूर नहीं किया, और आपसे कहा कि मुझे कोई बात सुनाइये, तो आपने ये आयत पढ़ी।

"كم تركوا من جنت وعيون"

(कितने ही बाग़ात और चश्मे वह छोड़ कर चले गए....),

उसने कहा "कोई शेअर सुनाइये", तो आप ने फ़रमाया: "मैं शेअर बहुत कम बयान करता हूँ", उसने कहा: "ज़रूर ही सुनाइये", तो आप ने ये अशआर पढ़े:

باتوا على قلل الأجبال تحرسهم
غلب الرجال فما أغنتهم القلل

واستنزلوا بعد عزّ من معاقلهم
وأسكنوا حفراً بئس ما نزلوا

ناداهم صارخ من بعد دفنهم
أين الأساور والتيجان والحلل

أين الوجوه اللتى كانت منعمة
من دونها تضرب الأستار والكلل

فـأفـصـح الـقـبـر عـنـهـم حـيـن سـائـلـه
تــلـك الــوجــوه عــلـيـهـــا الـدود يــقـتـتـل
قــد طـــالـــمـا أكـلـوا دهـراً وقـد شـربـوا
فــأصـبـحـوا بـعـد طـول الأكـل قـد أكـلـوا

उन्होंने पहाड़ों की चोटियों पर रातें गुज़ारी, बड़े ताक़तवर लोग उन की हिफाज़त व निगरानी करते थे, लेकिन (मोत के वक़्त) ये चोटियां भी उनके कुछ काम न आई।

क़िलों के बाद उन्हें नीचे उतारा गया और क़बरों में दफन कर दिया गया, बहुत बुरा है उनका ठिकाना।

दफन के बाद किसी पुकारने वाले ने उन्हें पुकार कर कहा कि वह कंगन, ताज और क़ीमती पोशाकों का क्या हुआ।

वह चेहरे क्या हुए जो बड़े सरसब्ज़ो शादाब थे. और जिन पर परदे लटकाए जाते थे।

जब उसने सवाल किया तो इनकी क़बर ने उन्हें ज़ाहिर कर दिया, तो देखा उनके चेहरों पर कीड़े लड़ रहे हैं।

बहुत ज़माने तक वो खाते पीते रहते थे, और अब खूब खाने (ऐश) के बाद उन्हें खुद खा लिया गया है।

मुतवक्किल यह सुन कर रो पड़ा, हत्ता कि उसकी दाढ़ी तर हो गई।

(11) सैय्यदना इमाम हसन असकरी इब्ने अली हादी عليه السلام

और आप (सैय्यदना ईमाम हादी عليه السلام)के साहबज़ादे हज़रत हसन असकरी عليه السلام आलिम फ़ाज़िल और ज़ाहिद थे, अपने ज़माने के अफ़ाज़िल में थे, अवाम ने आपसे बहुत सी रिवायात की हैं।

(12) सैय्यदना इमाम मुहम्मद मेहदी इब्ने हसन असकरी عليه السلام

और आप (इमाम हसन असकरी عليه السلام) के साहबज़ादे **हज़रत मेहदी** थे, **इब्न जौज़ी** ने अपनी सनद से हज़रत इब्न उमर رضي الله عنه से रिवायात की है कि रसूल صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया: "आखिरी ज़माने में मेरी औलाद में से एक शख्स निकलेगा जिसका नाम और कुन्नियत मेरे नाम और कुन्नियत पर होगी, वह ज़मीन को इन्साफ से भर देगा जैसा की वह ज़ुल्म से भरी होगी, यही मेहदी होंगे।

क़सीदह दर फ़ज़ाइल अइम्मा असना अशरा

حيدرة والحسنان بعده ثم علی و ابنه محمد

"हज़रत हैदर करार या'नी अली ﷺ और उनके बाद हज़रात हसन व हुसैन ﷺ उनके बाद अली और उनके बेटे मुहम्मद ﷺ।"

وجعفر الصادق، وابن جعفر موسى، ويتلوه علي السيد

"और हज़रत जा'फ़र सादिक़ ﷺ और उनके बेटे मूसा ﷺ और उनके बाद आने वाले आक़ा व पेश्वा! अली ﷺ"

أعني الرضا، ثم ابنه محمد ثم علی و ابنه ، المسدد

"या'नी हज़रत अली रज़ा ﷺ, उनके बेटे हज़रत मुहम्मद ﷺ व हज़रत अली ﷺ और उनके बेटे"

الحسن التالی ويتلو تلوه محمد بن الحسن المعتقد

"हज़रत हसन ﷺ और उनके बाद आने वाले क़ाबिल भरोसा हज़रत मुहम्मद बिन हसन ﷺ हैं"

قوم هم ائمتی وسادتی وإن لحانی معشر وفندوا

"यह वो क़ौम है जो मेरे अइम्मा व पेश्वा व सरदार हैं चाहे इस ज़मन में क़ौम मुझे ग़लत ही क्यों न ठहराए और झुठलाए"

أئمة أكرم بهم أئمة أسماؤهم مسرودةٌ لا تطرد

"वह ऐसे अइम्मा हैं जिनके ज़रिए इमामों को इज़्ज़त बख़्शी गई, उनके नाम क़ाबिले ज़िकर हैं जिन्हे झुठलाया नहीं जा सकता"

هم حجج الله علی عباده وهم إليه منهج مقصد

"वह अल्लाह ﷻ के बन्दों पर अल्लाह ﷻ की हुज्जत और दलील हैं और वह सब अल्लाह ﷻ तक पहुँचने के लिए अस्वा व मुन्हिब हैं"

هم النهار صوم لربهم وفی الدياجی ركع وسجد

"वह दिनो में रोज़ा रखते हैं और रात की तारीकियों में अल्लाह ﷻ के सामने रुकूअ व सुजूद में पड़े रहते हैं"

قوم أتى فى ﴿هل أتى﴾ مديحهم   هل شک فی ذلک إلا ملحد

"वह ऐसे हैं जिनकी तारीफ़ सुरह दहर में की गई है जिसके बारे में शक सिर्फ मुल्हिद को हो सकता है"

قوم لهم فى كل أرض مشهدٌ   لابل لهم فی کل قلب مشهد

"यह वह क़ौम है जिनका मुशहिद ज़मीन के हर ख़ित्ते में है बल्कि ये कहना ज़ियादा मुनासिब है कि इनका मुशहिद हर दिल में मौजूद है"

قوم منى والمشعران لهم   والمروتان لهم المسجد

"उनका तआल्लुक़ मिना से है, मशअर हरम या'नी मस्जिद मुज़्दलिफ़ा, सफ़ा व मरवा और मस्जिद हरम उन्ही की हैं"

قوم لهم مكة والأبطح وال   خيف وجمع والبقيع الغرقد

"मक्का, बूतहा, ख़ैफ, मिना, मुज़्दलिफ़ा और जन्नत उल बक़ी सब इन्ही के हैं "

قوم لهم فضل ومجد باذخ   يعرفه المشرک والموحد

"यह वह क़ौम है जिनकी फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी नुमाया है जिससे मुशरिक व मोहिद सब वाक़िफ़ हैं"

ماصدق الناس وما تصدقوا   مانسكوا وأفطروا وعبدوا

"आम लोग न ईमान लाते, न सदक़ा करते, न क़ुरबानी करते, न इफ्तार करते और न इबादत करते"

ولا غزوا وأوجبوا حجاً ولا   صلوا ولا صاموا ولا تعبدوا

"न जिहाद करते, न हज करते, न नमाज़ अदा करते, न रोज़ा रख़ते और न इबादत गुज़ार होते"

لولا رسول الله وهو جدهم   يا حبذا الوالد، ثم الولد

"अगर अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ न होते, जो उनके जद्दे अमजद हैं, क्या ही ख़ुश नसीब हैं बाप और बेटे।"

ومصرع السبط فلا أذكره وفي الحشا منه لهيب يقد

"नवास-ए-रसूल ﷺ की शहादत का ज़िकर मैं नहीं करुँगा हालाँकि उस वाक़ये ने दिल के अंदर आग भड़का रखी है"

يرى الفرات ابن الرسول ظامئا يلقى الردى، وابن الدعي يرد

"दरया-ऐ-फ़ुरात इब्न रसूल ﷺ को प्यासा देख रही है जबकि कमतर लोगों और उनके बेटों तक इसका पानी पहुंच रहा है"

حسبک من هذا وحسب من بغى عليهم يوم المعاد الصمد

"क़यामत के दिन अल्लाह ﷻ उनके लिए और उन बाग़ियो के लिए काफ़ी है"

ومن يخن أحمد في أولاده فخصمه يوم التلاقي احمد

"जो शख़्स औलाद-ए-अहमद या'नी रसूल अकरम ﷺ की औलाद से ख़यानत करेगा वह क़यामत के दिन रसूल अकरम ﷺ उसके दुश्मन होंगे"

ياأهل بيت المصطفى يا عدتي ومن على حبهم أعتمد

"ऐ अहल बयते मुस्तफा ﷺ मेरा सरमाया हयात और वह लोग जिनकी मुहब्बत पर मैं एतिमाद करता हूँ "

أنتم إلى الله غداً وسيلي فكيف أشقى وبكم أعتضد

"आप ही लोग अल्लाह ﷻ के यहाँ मेरा वसीला होंगे फिर मैं क्योंकर ना मुराद हो सकता हूँ और मुझे आप ही पर भरोसा है"

وليكم في الخلد حي خالد والضد في نار اللظى مخلد

"जन्नत में आपके दोस्त हमेशा ज़िंदा व जावेद रहेंगे और दुश्मन हमेशा के लिए भड़कती आग का ईंधन होंगे"

दुरूद अइम्मा-ए-अहले बयत

اللهم صل أفضل الصلوات على سيد السادات وخاتم الرسالات،وسلم أكمل التسليم على خاتم النبيين ورحمة للعالمين ، وعلى سيدنا الحسين وأخيه وأمه وأبيه ،الحسن وفاطمة وعلى ،عدد كل أوليائك العارفين وعبادك الصالحين ،وعلى على بن الحسين زين العابدين ،عدد كل فضل من الله وإنعام ،وعلى زيد بن على الإمام ، عدد كل ذكر وذاكر ،وشكر وشاكر ،وعلى محمد بن على الباقر عدد كل دقيقة من الدقائق،وكل حقيقة من الحقائق ،وعلى جعفر بن محمد الصادق،عدد كل منظوم وناظم وكل سالم وغانم ،وعلى موسى بن جعفر الكاظم عدد كل راضى ومرتضى ،وعلى على بن موسى الرضا عدد تقلبات وتوجهات الفؤاد،وعلى محمد بن على الجواد عدد كل ساق وحادى ،وعلى على بن محمد الهادى عدد كل بائع ومشترى ،وعلى الحسن بن على العسكرى ،وعلى محمد المهدى ،والحمد لله رب العالمين

ऐ अल्लाह ﷻ! सबसे अफ़ज़ल दुरूद नाज़िल फ़रमा सय्यिदों के सय्यद और ख़ातिम अर-रसूल हज़रत मुहम्मद ﷺ पर, और सबसे मुकम्मल सलाम नाज़िल फरमा नबीयों के ख़ातिम और तमाम जहानों की रहमत मुहम्मद ﷺ पर, और हमारे सरदार हज़रत हसन ؓ पर, उनके भाई हज़रत हुसैन ؓ, उनकी वालिदा हज़रत फातिमा ؓ और उनके वालिद हज़रत अली ؓ पर, अपने तमाम आरफीन अवलिया और नेक बन्दों की तादाद के बराबर, और हज़रत ज़ैन उल आबिदीन ؓ पर, अल्लाह ﷻ !के फ़ज़लो इनाम की तादाद के बराबर, और इमाम ज़ैद बिन अली ؓ पर, हर ज़िकर और ज़िकर करने वाले, हर शुकर और शुकर करने वालो की तादाद के बराबर, और इमाम मुहम्मद बिन अली बाक़र ؓ पर, हर मिनिट और हर हकीकत की तादाद के बराबर, और जा'फ़र सादिक़ ؓ पर, हर नज़्म और नज़्म वाले, और हर सालिम और ग़नीमत वाले की तादाद के बराबर, और मूसा काज़िम ؓ पर, और हर राजी होने वाले और राजी किए जाने वाले की तादाद के बराबर, और अली ईब्ने मूसा रज़ा ؓ पर, दिल की तवज्जोहात और उसके उलटने पलटने की तादाद के बराबर, और मुहम्मद जव्वाद ؓ पर,

हर हांकने वाले और हादीख़ूवा की तादाद के बराबर, और अली बिन मुहम्मद हादी ؑ पर, हर बाए और मुश्तरी की तादाद के बराबर, और अली हसन अस्करी ؑ पर, और अली मुहम्मद मेहदी ؑ पर, और तमाम तारीफें अल्लाह ﷻ ही के लिए हैं जो सारे जहानों का परवर दिगार है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰىٓ اَبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ٥

(ऐ अल्लाह ﷻ रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा की तूने रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहीम ؑ पर और इब्राहिम ؑ की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक़ और बड़ी बुजुर्गी वाला है।)

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَجِيْدٌ ٥

(ऐ अल्लाह ﷻ बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा की बरकत फ़रमाई तूने इब्राहिम ؑ पर और इब्राहिम ؑ की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक़ और बुजुर्गी वाला है।)

IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
(Ahl-e-Sunnah)

Founder & Chairman :
Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi
Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)
Mo. 85110 21786